Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

कपूरथला रियासत की भारतीय संगीत को देन

PARMJIT KAUR

Assistant Professor, Department of Music (Vocal), Hindu Kanya College, Kapurthala, Punjab

शोध सार

आजाद भारत को स्वतंत्र रुप से सांस लेते हुए आज लगभग 75 वर्ष बीत चुके हैं और बस्तीवाद से मुक्त हुए सात दशक से अधिक समय हो चुका है। कपूरथला राजघराने का संगीत के प्रति लगाव होने के कारण ही बहुत से शास्त्रीय संगीतज्ञों और गुरबाणी कीर्तनकारों को राजसी आश्रय (वृहदस्त) प्राप्त था। इस राजघराने की पीढ़ियों की परम्परा में भारतीय संगीत कला को प्रफुल्लित होने का अवसर प्रदान किया। इसी पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत की सेवा के परिणामस्वरुप कपूरथला घराना अस्तित्व में आया। भारत की रियासतों ने पन्द्रहवीं शताब्दी से पूर्व और बाद में भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुस्लिम शासक अकबर से लेकर मोहम्मद शाह रंगीले के समय काल में भारतीय संगीत का अत्यधिक विकास हुआ। इनके साथ ही ग्वालियर, जयपुर, उदयपुर, बड़ौदा, बीकानेर आदि रियासतों के साथ कपूरथला रियासत ने भी संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान का निर्वाह किया है रियासतों की परम्परा रही है कि संगीतकारों की नियुक्ति वेतन पर तथा संगीत कार्यक्रमों के आयोजन में कलाकारों को आमंत्रित कर उन्हें धन और तोहफे देकर पुरस्कृत किया जाता था। अविभाजित पंजाब की अन्य रियासतों अस्तु पटियाला, बहावलपुर, फरीदकोट, मलेरकोटला, नाभा आदि ने उत्तर भारतीय संगीत की उन्नति में अहम भूमिका का निर्वाह किया। प्रस्तुत शोधपत्र को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखा गया है।

बीज शब्द- कपूरथला, रियासत, भारतीय संगीत, गुरबाणी, घराना

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारतीय कला, संस्कृति और संगीत मुस्लिम प्रभाव के अधीन थे। दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत विदेशी आक्रमणकारियों का अधिक शिकार हुआ। पंजाब मुस्लिम आक्रमण से पूर्व भारतीय संगीत का सबसे समृद्धशाली प्रदेश रहा है। मुस्लिम राजाओं के आगमन ने उत्तर भारतीय संगीत की दशा ही बदल दी। पुरातन संगीत विभिन्न काल में आई जातियों के प्रभाव से मिश्रित होता गया।

किसी भी प्रांत की संस्कृति का गौरव वहां के निवासियों की प्रगति का सूचक है। पंजाब की संस्कृति ने भारतीय संगीत की सम्पदा को अमीर किया है क्योंकि अभावों से रहित इस प्रदेश में कला को विस्तार मिला है यद्यपि पंजाब में शास्त्र पक्ष और किसी विशेष धारा का प्रवाह ना भी हुआ हो तो भी पंजाब के घराने, पंजाब अंग की गायकी, लोक परम्परा और गुरबाणी संगीत ऐसे उदाहरण हैं जो पंजाब की भारतीय संगीत परम्परा को दिए योगदान को दर्शाती है। संगीत की इस परम्परा को सुविधा सम्पन्न राजा महाराजाओं ने आश्रय प्रदान कर पोशित किया है।

भारत में आजादी पूर्व रियासतोंए राजे रजवाड़ों की परम्परा रही है। इन रियासतों द्वारा संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान का निर्वाह किया है। इतिहास पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी से पूर्व और बाद के शासकों जैसे अकबरए राजा मान सिंह तोमर, मुहम्मद शाह रंगीले आदि के संगीत के विकास और ग्वालियर, जयपुर, उदयपुर, बड़ौदा, बीकानेर, पंजाब से पटियाला, बहावलपुर, कपूरथला, फरीदकोट, मलेरकोटला, नाभा आदि रियासतों ने संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ भारतीय संगीत की उन्नति में अहम भूमिका निभाई है। इन रियासतों में नियुक्त संगीतकारों

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

को वेतन पर देकर संगीत सभाओं में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया जाता था। पुरस्कारों और आर्थिक रुप से भी उचित सहायता का प्रावधान था। राजाश्रय प्राप्त कलाकारों की संकुचित मनोवृति ने घरानों की नींव रखी और देश के अनेक राज्यों तथा रियासतों में गुरु शिष्य परम्परा का प्रचलन प्रारम्भ हो रहा था, जिसके कारण गायन, वादन, नृत्य के साथ ही चित्रकला के स्कूल, शैली अथवा घराने पनपने लगे।

कपूरथला रियासत की नींव नवाब जस्सा सिंह आहलूवालिया द्वारा रखी गई। इनके पूर्वजों में गण्डा सिंह "आहलू" गावं के निवासी थे और कलाल जाति की कन्या से विवाह करने के कारण कलाल कहे जाने लगे। नवाब जस्सा सिंह के गद्दी पर बैठने से वह पुनः आहलूवालिया कहलाए। कपूरथला रियासत की नींव अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पड़ी परन्तु रियासत के अस्तित्व में आने से पूर्व ही इस भू-भाग में संगीत की स्वर लहरियां बसी हुई थी। पंजाब प्रांत पर ऐतिहासिक परिपेक्ष से दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि नवाब जस्सा सिंह आहलूवालिया को सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की धर्म पत्नी सुन्दरी जी ने गुरु गोबिन्द सिंह जी की तलवार भेंट की थी। नवाब जस्सा सिंह 1753 ई. से 1761 ई, तक सिक्ख पंथ के प्रमुख रहे हैं। जो अरबीए पर्शियन भाषा के ज्ञाता अच्छे घुडड़सवार होने के साथ संगीत की जानकारी भी रखते थे।

संबंधित कार्य की समीक्षा

डॉ. गीता पेन्टल, पंजाब की संगीत परम्परा, (2011) में लेखक ने पंजाब की संगीत परम्परा पर विस्तृत जानकारी प्रदान की है। पंजाब में संगीत की स्थिति, संगीत की विभिन्न शैलियों, सिक्ख गुरुओं का सांगीतिक ज्ञान, अलग-अलग समय काल के शासकों द्वारा संगीत के क्षेत्र में दिया योगदान, पंजाब के शास्त्रीय संगीत के कीर्तनकारों से संबंधित विस्तृत चर्चा की गई है। डॉ. मनजीत कौर पड्डा, कपूरथला रियासत के शास्त्रीय संगीतज्ञ एवमं गुरवाणी कीर्तनकार, (2015) में पंजाब के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए यहां की सांगीतिक परम्परा, संगीत के घराने, कपूरथला घराने की गायन परम्परा, कपूरथला रियासत के शासकों का संगीत के प्रति अनुराग, शास्त्रीय संगीतज्ञों, सिक्ख कीर्तनकारों के योगदान, कपूरथला क्षेत्र के रागी, रबाबियों से भेंटवार्ता आदि पर विस्तारपूरण चर्चा की गई है। बलबीर सिंह कंवल, पंजाब के प्रसिद्ध रागी रबाबी (1604 ई. दृ 2004 ई), (2010), में लेखक ने पंजाब के अलग-अलग समय और काल के प्रसिद्ध रागी रबाबियों द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। कपूरथला राजघराने में नियुक्त दरबारी गायकों, वादकों की संगीत शिक्षा और उनके संगीत के क्षेत्र में दिए योगदान पर विस्तार से बताया गया है। डॉ. गुरनाम सिंह, पंजाबी संगीतकार, (2005) लेखक ने इस पुस्तक में पंजाब की संगीत परम्परा पर विस्तारपूर्वक लिखा है और पंजाब के उच्च श्रेणी के शास्त्रीय गायकों, वादकों, तबला वादकों और संगीताचार्यों के योगदान पर प्रकाश डाला है।

उपर्युक्त समीक्षा से ज्ञात हुआ है कि कपूरथला रियासत का संगीत के विकास और संरक्षण में प्रमुख योगदान रहा है। प्रत्येक शासक के काल में उच्चकोटि के संगीतकारों की नियुक्ति, उनकी कला को विस्तार प्रदान करने के लिए राजाश्रय प्रदान करना, कलाकारों को आर्थिक तंगी का सामना ना करना पड़े इसके लिए समय समय पर उन्हें भेंट रुप में पुरस्कृत करना। प्रस्तुत शोध पत्र में समस्त बिन्दुओं पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया है। किसी भी देश कौम का इतिहास भविष्य की पीढ़ी के लिए मार्ग दर्शन का कार्य करता है, प्रस्तुत शोध का मुख्य ध्येय भी अपनी भावी पीढ़ी को भारतीय संगीत की अमीर विरासत से जोड़ना है ताकि हमारी संस्कृति केवल इतिहास के पन्नों तक ही सीमित ना रह जाए।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

शोध पत्र का उद्देश्य

कपूरथला राजसी परम्परा का इतिहास बड़ा समृद्द और स्वर्णिम रहा है। रियासतों के समापन से संगीत दरबारों से निकल साधारण जन तक पहुँचा। इन रियासतों में प्रफुल्लित हुई संगीत की परम्परा से भविष्य की पीढ़ी को अवगत करवाना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

- कपूरथला राज परम्परा से सम्बन्धित शासकों के संगीत ज्ञान पर प्रकाश डालना।
- अलग-अलग शासकों के काल में नियुक्त शास्त्रीय संगीत और गुरबाणी संगीत के कलाकारों की उपलब्धियों को परिलक्षित करना।
- इन कलाकारों के संगीत के संरक्षण में दिए योगदान का विश्लेषण करना।
- राज घराने के सदस्यों }ारा वर्तमान में संगीत के उत्थान में किए कार्यों पर प्रकाश डालना।

शोध विधि

शोध पत्र लेखन मे ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रमुखता दी गई है। पुस्तकों, ग्रंथों, समाचार पत्रों तथा कपूरथला राजघराने के सदस्यों एवं पंजाब सरकार द्वारा आयोजित किए गए राष्ट्रीय स्तर के संगीत समाराहों पर प्रकाशित लेखों के माध्यम से सामग्री एकत्रित की गई है।

प्रस्तुत शोध का आशय नई पीढ़ी को यहां की अमीर संस्कृति, सांगीतिक विरासत की जानकारी प्रदान करना है, वर्तमान पीढ़ी बाहरी चमक दमक के प्रभाव में यहां की शास्त्रीय और गुरबाणी संगीत की परम्परा के उस विशाल रुप से अनभिज्ञ है, आवश्यकता है नई पीढ़ी को जागृत करने की ताकि भविष्य में भारतीय संगीत की विशालता बनी रहे।

कपूरथला रियासत की विरासत

ऐसा मान्य है कि कपूरथला की स्थापना कपूर वंश परम्परा से रही है जो जैसलमेर से आए राजपूत थे। ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय इस का आगमन हुआ, ऐतिहासिक रुप से कहीं कहीं इसे मिथ्यात्मक भी माना है। अठारहवीं शताब्दी का काल मुगल साम्राज्य के उत्तरार्द्ध का काल जिसमें आजादी के लिए संघर्षरत जातियां सिक्ख, अफगान और मराठा भी थे। ऐसे समय में जस्सा सिंह आहलूवालिया ने सिक्खों में महत्वपूर्ण स्थान बनाया, जिसके पीछे उनकी वीरता, धार्मिकता और राजनैतिक समझ और सूझबूझ थी। यही कारण है कि जस्सा सिंह आहलूवालिया को कपूरथला राजघराने का वास्तविक संस्थापक बतलाया गया है। शोध के आधार पर यह जानने का प्रयास किया गया कि कपूरथला रियासत में संगीत विरासत के रुप में कैसे आया, उसके अंकुरण से विकास तक कपूरथला के आश्रयदाताओं की क्या भूमिका रही आदि।

कपूरथला रियासत के गौरवशाली इतिहास की राजसी परम्परा में संगीत अभिन्न अंग के रुप में रहा है। ब्रिटिश राज्य होशियारपुर के उत्तर पूर्व का सीमा क्षेत्र और जालन्धर की पूर्व की सीमा से जुड़ा और दक्षिण में सतलुज नदी के साथ-साथ पश्चिम में ब्यास नदी तक इसकी सीमा फैली हुई है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

संगीत के विकास पर दृष्टि डालें तो इस रियासत के अनेकों शासकों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। नवाब जस्सा सिंह आहलूवालिया ;1718द्ध स्वंय गाकर गुरुबाणी (गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित वाणी) गायन किया करते थे। कुंवर विक्रम सिंह और राजा दलजीत सिंह के समय संगीत उच्च स्तर पर था।

कपूरथला घराना

कपूरथला घराना के संगीतज्ञों और वंश परम्परा का मूल तानसेन के सेनिया घराने से जोड़ा जाता है। कपूरथला घराने की परम्परा 1858 ई. के आस पास अस्तित्व में आई। कुंवर विक्रम सिंह तानसेन के एक शिष्य को कपूरथला ले आए। यहीं से पंजाब की संस्कृति और सेनिया घराने का सम्बन्ध स्थापित हुआ। तानसेन की बेटी का विवाह सेनिया बीनकार घराने के राजा मिश्री चन्द्र के साथ हुआ था। इन्हीं की वंश परम्परा से अदारंग की पौत्री का विवाह सैयद मीर से हुआ तथा इनके पुत्र नसीर अहमद बहादुर शाह जफर के यहां शाही दरबारी संगीतज्ञ थे। नसीर अहमद की संगीत शिक्षा इनके पिता से हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि जब अंग्रेजों ने बहादुर शाह जफर और उनके कई मंत्रियों को जेल मे डाला तो उनमें मियां नसीर अहमद भी थे क्योंकि वह दरबारी उच्चाधिकारियों की तरह पगड़ी पहने थे। इन्हीं नसीर अहमद को कुंवर विक्रम सिंह द्वारा मुक्त करा कर कपूरथला लाया गया। मियां नासिर अहमद ने अपना सम्पूर्ण जीवन यहीं पर व्यतीत किया। उनकी मज़ार आज भी कपूरथला में है। इनके दो पुत्र मीर कल्लन और मीर रहमत अली अपने समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञए बीन और सुर सिंगार के सिद्धहस्त वादक थे। यहां से सेनिया बीनकार की परम्परा का आगमन पंजाब की संगीत परम्परा में हुआ। रहमत अली ने अली मोहम्मद से संगीत की विद्या प्राप्त की। इनकी कला की श्रेष्ठता इस बात से स्पष्ट होती है कि मोहम्मद अली ने स्वंय उन्हें अपना शार्गिद बनाया।

टाइम्स आफ इण्डिया के साक्षात्कार में विलायत खां साहिब ने कहा कि श्पंजाब में पटियाला घराने के साथ साथ कपूरथला घराने ने भी अच्छे कलाकारों का योगदान दिया, जिनमें नसिर अहमद खां भी थे जिनके द्वारा कपूरथला घराने की नींव रखी गई, उनके दादा गुरु उस्ताद बन्दे हसन (इलाही बख्श के पिता) भी सिरमौर में दरबारी संगीतज्ञ बनने से पूर्व कपूरथला घराने के दरबारी संगीतज्ञ थे। इनकी शिष्य परम्परा में प्रसिद्ध ताउस और दिलरुबा वादक महन्त गज्जा सिंह, अता मुहम्मद जो बन्ने खां के भी शिष्य थे, इनके पुत्र प्रसिद्ध गुरबाणी कीर्तनकार भाई लाल (स्वर्ण मन्दिर अमृतसर में हजूरी रागी) भी मीर रहमत अली के शिष्य थे। कपूरथला घराने से ही महबूब अली (भाई बूबा) मीर रहमत अली के शिष्य थे जिन्होंने बाद में पटियाला राजघराने का आश्रय प्राप्त किया।

अनीता सिंह के अनुसार श्कपूरथाल घराना की परम्परा को आगे बढ़ाने में एक और नाम साईं इलियास का यहां उल्लेख करना आवश्यक है। प्रसिद्ध ध्रुपदकार परम्परा से, जिनकी शिष्य परम्परा में प. कन्हैया लाल, पं. नत्थूरामए शंकर दास और मुरली लाल प्रमुख हैं।

गीता पेन्टल लिखते हैं किए "साईं इलियास ने तलवंडी घराने के किसी उस्ताद से शिक्षा प्राप्त की थी परन्तु कपूरथला के निवासी होने के कारण और संगीत केन्द्र स्थापित करने के कारण आपको कपूरथला घराने के संस्थापक होने की प्रतिष्ठा प्रदान की जाती है।" अमीचन्द सुलतानपुरीए ने इनसे ध्रुपद गायन की शिक्षा प्राप्त की जो कठिन लयकारियों में सिद्धहस्त थे और कठिन तालों में ध्रुपद गायन करते थे। पं. नत्थूरामए साईं नारायण, भगवान दास सैनी इन्हीं की शिष्य परम्परा से थे।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

कपूरथला राजघराने की यह विशेषता रही है कि यहां के सभी राजाओं द्वारा संगीतकारों को आश्रय प्रदान कर उनकी कला को प्रफुल्लित होने के लिए मंच प्रदान किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रत्येक गायन शैली के विकास में इस राजघराने का अहम योगदान रहा है। ध्रुपद गायन शैली 15वीं शताब्दी की उपज है और इसकी डागुर बानी के संस्थापक स्वामी हरिदास जिनका संबंध पंजाब से रहा है, हांलाकि कुछ इनका संबंध मुल्तान से जोड़ते हैं। इनकी शिष्य परम्परा में प्रमुख हंै, बैजूए तानसेन, गोपाल लाल, मदन राज और सोमनाथ पंडित, दिवाकर पंडित जो आगे चलकर मुस्लिम धर्म अपनाने के कारण सूरज खां और चांद खां के नाम से जाने गए।

प्रो. अजीत सिंह पेन्टल के अनुसारए "स्वामी जी से शिक्षा प्राप्ति के पश्चात इनके शिष्य अलग अलग स्थानों पर जा बसे और बहुत सारी ध्रुपद धमार, त्रिवट, तराना, रागमाला आदि में बन्दिशों की रचना की और देश के अलग अलग क्षेत्रों में प्रचारित किया।

स्वामी हरिदास जी से संगीत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात सूरज खां और चांद खां की कर्मस्थली पंजाब रही और पंजाब के तलवंडी, शामचैरासी, हरियाणा और कपूरथला घराने में ध्रुपद शैली की परम्परा विकसित हुई। तलवंडी घराने के भाई चांद, भाई गुरमुख, भाई उत्तम , भाई सुन्दर आदि सभी गुरबाणी कीर्तनकारों ने ध्रुपद शैली को अपनाया। गुरुबाणी कीर्तन परम्परा ने पंजाब में ध्रुपद गायन परम्परा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया ऐसा कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सिक्ख कीर्तन परम्परा में ध्रुपद शैली आधारित बाणी को टकसाली रीत अथवा रीतियां कहा जाता था। अपने पूर्वजों से प्राप्त चीजों का गायन गुरबाणी कीर्तनकार रागियों द्वारा आज भी सुना जा सकता है। तलवंडी घराने की परम्परा से ध्रुपदकारों में छज्जू खां, मौला बख्श, मौलादाद खां, बुग्गर खां, मुबारक अली खां, भीखे खां, महाशय गंगा सिहं, पं वैष्णव दास, हरियाणा घराने से छज्जू राम, भक्त राम और उनके शिष्य गुज्जर राम वासुदेव (रागी), मोहम्मद हुसैन, हिदायत हुसैन, खुदा बख्श, अहमद बख्श और कपूरथला घराना से साईं इलियास जिनके शार्गिद प. अमीचन्द, प. नत्थूरामए रहमत अली और उनके शिष्य भाई बूबा (महबूब अली) सभी उच्चकोटि के ध्रुपदकार थे। रहमद अली कपूरथला राज घराने के महाराजा बिक्रम सिंह के दरबारी संगीतज्ञ थे।

कपूरथला राजघराने के आश्रयदाताओं का सांगीतिक योगदान

कपूरथला राजघराने की परम्परा का इतिहास अति विशिष्ट रहा है, जहां राजसी महल, राजा महाराजाओं के स्तम्भ, संग्रहालय, स्मारक तथा संगीत की प्राचीन परम्परा सबके लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। संगीत के प्रकाण्ड विद्वान तानसेन के शिष्य नसीर अहमद मीर की मजार आज भी कपूरथला शहर में विद्यामान है। इस घराने के सभी राजाओं के दरबार में उच्चकोटि के संगीतकारों की नियुक्ति उनकी सांगीतिक समझ और लगाव को दर्शाती है।

नवाब जस्सा सिंह आहलूवालिया कपूरथला के संस्थापक गुरुबाणी का पाठ संगीतबद्ध करके गाया करते थे। पुत्र ना होने के कारण इनकी वंश परम्परा को आगे बढ़ाने में इनके चाचा गुरबख्श सिंह तत्पश्चात प्रपोत्र गद्दी पर बैठे। इन सभी राजाओं के शासन काल में गुरबाणी कीर्तन का गायन पारम्परिक निर्धारित रागों में करने की प्रथा थी। महाराजा निहाल सिंह के पुत्र राजा बिक्रम सिंह जिनकी रुचि संगीत के प्रति होने के कारण कपूरथला की संगीत परम्परा की नींव रखने का श्रेय इन्हैं जाता है। मीर नसीर अहमद को अंग्रोजों की चंगुल से छुड़ा कपूरथला लाने वाले महाराजा बिक्रम सिंह ही हैं। इनके राज संरक्षण में मीर नसीर अहमद ने तानसेन की सेनिया वंश परम्परा से अपने शिष्यों को तालीम प्रदान की। मीर

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

नासिर अहमद के दो पुत्र मीर कल्लन और मीर रहमत अली दोनों ही ध्रुपदकारए सुरसिंगार और वीणा बजाने में निपुण थे। इन्हीं के माध्यम से सेनिया घराने की बीन परम्परा की शैली और तकनीक इत्यादि कपूरथला घराना से पंजाब में आई। राजा दलजीत सिंह ने भी पूर्वजों की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए संगीत को पूर्ण आश्रय प्रदान किया, इनके दरबार में प्रसिद्ध संगीतज्ञ मीर रहमत अली नियुक्त थे। कपूरथला घराने की सांगीतिक परम्परा को अमीर और विकसित करने के लिए महाराजा दलजीत सिंह की आज्ञा से कलकत्ता अली मोहम्मद (तानसेन की वंश परम्परा से) से संगीत की शिक्षा प्राप्त करने गए। वहीं दूसरी और साईं इलियास के शिष्य रहमत खां ने सियालकोट से बड़ौदा जाकर कपूरथला घराने की परम्परा को और विस्तार प्रदान किया।

कपूरथला घराने की परम्परा जब अपने विकास क्रम में थी वहीं दूसरी और एक अन्य प्रसिद्ध कलाकार मौलाबख्श भारतीय स्वर लिपि के रचनाकार होने के साथ प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक के रुप में जाने गए हैं। रहमत खां ने इन्हीं मौला बख्श की बेटी खतीजिया से विवाह किया और रहमत खां को मौला बख्श की गायकी की विशेषताओं के साथ बन्दिशें भी प्राप्त हुई। इस प्रकार कपूरथला घराना और बड़ौदा का सुमेल भारतीय संगीत परम्परा के लिए ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहा है। रहमत खां के पुत्र इनायत खां ने कपूरथला परम्परा में सूफी शैली का समावेश कर इस घराने की परम्परा को आगे बढ़ाया।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में महाराजा रणधीर सिंह के राज सिंहासन पर बैठने के पश्चात कपूरथला रियासत में सामाजिक और शैक्षणिक स्तर पर काफी सुधार हुआ। इनके राज दरबार में कई प्रसिद्ध कलाकार नियुक्त थे तथा समय समय पर रबाबी और मीरासी कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाता था। इनके दरबार में कई गुणी संगीतज्ञों की नियुक्ति में साईं इलियास, करीम बख्श, अब्दुल रहीम खां (हीमें खां), वली मुहम्मद, रहमत अली प्रमुख हैं। रहमत अली की शिष्य परम्परा में महन्त गज्जा सिंह, भाई बूबा (महबूब अली) का सम्बन्ध भी कपूरथला रियासत से रहा है। जो उन्नीसवीं शताब्दी के भाई फिरंदा के वंशजो से प्रसिद्ध रबाबी भाई अमीर बख्श के पुत्र थे।

राजा खड़ग सिंह के सिंहासन रुढ़ होने पर कपूरथला रियासत की गुरबाणी संगीत की परम्परा का निर्वाह होने के साथ ही संगीत की धारा पुनः प्रवाहित होने लगी। महाराजा जगजीत सिंह भारतीय संगीत के अतिरिक्त अंग्रेजी संगीत और नृत्य में भी रुचि रखते थे। इनके दरबार में कई रबाबी परम्परा से जुड़े गुणी संगीतकार भाई बाबर, भाई जोगा, भाई अल्लादिया, भाई मुबारक (तबला वादक) भाई रुढ़ा, भाई बूढ़ा आदि की समय समय पर प्रस्तुति होती रहती थी। हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन, जालन्धर के आयोजन में कपूरथला रियासत द्वारा आर्थिक रुप से पूर्ण सहायता प्रदान की जाती थी। डॉ गीता पेन्टल श्मौसिकी दृ ए दृ हिन्दश् के हवाले से लिखते हैं कि, "बाबा हरिवल्लभ और सरदार बिक्रम सिंह दोनो ही मीर नासिर अहमद के शिष्य थे। सरदार बिक्रम सिंह के पुत्र राजा दलजीत सिंह और सर प्रताप सिंह भी संगीत के सिद्धहस्त कलाकार रहे है।

सर प्रताप सिंह के पुत्र कैप्टन कुंवर जसजीत भी संगीत का उच्च ज्ञान रखते थे। राजघराने के पारिवारिक सदस्यों का संगीत के प्रति लगाव कपूरथला घराने की परम्परा को विस्तार देने और भारत भर में प्रसिद्धि प्रदान करने में महत्वपूर्ण रहा है। इस रियासत के सभी शासकों का गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित रागों में कीर्तन की परम्परा तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेष निष्ठा के कारण ही गुणी संगीतकारों का यहां राजाश्रय मिला। कलाकारों को उचित मान-सम्मान के साथ उनका उपाधियों से अलंकरण, पारितोषिक आदि प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाता थाए इन्हीं शासकों के योगदान के

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

परिणामस्वरुप कपूरथला घराने की परम्परा का विकास हुआ। आजादी पूर्व तक सभी घरानों का अस्तित्व बना रहा अस्तु संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली का आगमन घराना परम्परा के ह्रास का कारण बना। पंजाब में प्रचलित घरानों द्वारा मध्यकालीन गायन शैली ध्रुपद की परम्परा का निर्वाह शास्त्रीय संगीत के साथ गुरबाणी गायन में भी किया गया। बलबीर सिंह कंवल अपनी पुस्तक पंजाबी के प्रसिद्ध रागी रबाब में लिखते हैं दृ

कपूरथला, हरियाणा, शाम तलवण्डी।

डागर, गोहार, नौहार, रणमण्डी।।

कपूरथला घराना ध्रुपद की डागुर परम्परा का अनुयायी रहा है। जैसा कि पूर्व में ही लिखा है कि इस घराने के कलाकार अपना संबंध तानसेन की सेनिया परम्परा से जोड़ते हैं तथा स्वामी हरिदास के शिष्य सूरज खां और चांद खां को अपना आदर्श मानते हैं।

वर्तमान में राज परम्परा समाप्त हो चुकी है। लोकतांत्रिक रुप से चुनी सरकार का शासन है। इसी क्रम में भारत सरकार के सहयोग से कपूरथला राजघराने से रानी अनीता सिंह और राजा ब्रिगेडियर सुखजीत सिंह के प्रयासों से कपूरथला राजमहल (वर्तमान में सैनिक स्कूलए कपूरथला) के प्रांगण में "शरद उत्सव" के नाम से नवाब जस्सा सिंह आहलूवालिया को समर्पित पहला शास्त्रीय संगीत का वार्षिक सम्मेलन 19 अक्तूबर से 21 अक्तूबर 2002 से आयोजित कर कपूरथला की पुरातन शास्त्रीय परम्परा को पुनः जागृत किया। लगभग छः वर्षो तक यह वार्षिक सम्मेलन बिना किसी बाधा के चलता रहा जिसमें देश के उच्चकोटि के संगीतकार यथा पं. देबू चैधरी, पं. राजन साजन मिश्र, बेगम परवीन सुल्ताना, पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. किशन महाराज, पं. बिरजू महाराज, पं. एल.के. पंडित, पं. हरिप्रसाद चैरसिया, पं. छन्नू लाल मिश्रा, पं. शिव कुमार शर्मा, सुजात खां, साबरी ब्रदर्स, बरकत सिद्धू, शफकत अली खां (पाकिस्तान), फरीदा खानम (पाकिस्तान) आदि की प्रस्तुतियां उल्लेखनीय हैं परन्तु आर्थिक सहायता के अभाव में यह सम्मेलन आगे नहीं आयोजित हो सका। इस सम्मेलन का आयोजन कपूरथला की राजसी परम्परा के खून में संगीत के प्रति लगाव को दर्शाता है।

कपूरथला का संगीत घराना और राजघराना

कपूरथला घराना की परम्परा का प्राप्त पुस्तकों और लेखों में बहुत विस्तृत जानकारी का अभाव है अस्तु कपूरथला घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास का वह प्रमुख घराना रहा है जिसे यहां के राजाओंए महाराजाओं का पूर्ण संरक्षण प्राप्त था और राजमहलों में गुंजित स्वरलहरियां कपूरथला की गलियों में विचर रहे प्राणियों के कानों में पड़ती थीं। ऐतिहासिक खोज यह सिद्ध करती है कि राजमहल (जगतजीत महल) के साथ ही मीर नासिर अहमद (तानसेन की वंश परम्परा से) ने इस घराने में नई ऊर्जा का संचार किया। बहादुर शाह जफर के दरबारी संगीतज्ञ मीर नासिर अहमद को महाराजा बिक्रम सिहं अंग्रेजों की चंगुल से छुड़ा कपूरथला लाए, तानसेन के वंशज रहे हिम्मत जिनके दो पुत्र रागरस और रसबीन फकीर हो गए और बेटी का विवाह मीर नासिर अहमद से हुआ इनके दो पुत्र कल्लन और मीर रहमत अली दोनो वीणा और सुर सिंगार के सिद्धहस्तए मीर रहमत अली ने मीर मोहम्मद से सांगीतिक ज्ञान प्राप्त कर राजा दलजीत सिंह के दरबार में नियुक्ति प्राप्त की। कपूरथला राजघराने से अनिता सिंह ने अपने लेख, "Music Tradition of Kapurthala में इस बात का उल्लेख किया है कि "कपूरथला घराना की परम्परा में साईं इलियास का महत्वपूर्ण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

योगदान रहा है। साईं इलियास ध्रुपद और सूफी संगीत के महान संगीतकार इनके सान्निध्य में ध्रुपद गायन शैली के कई शिष्यों ने शिक्षा प्राप्त कर देश विदेश में उसका प्रचार और प्रसार किया।

कपूरथला रियासत के शासक स्वंय संगीत ज्ञाता होने के कारण भारतीय संगीत और गुरबाणी संगीत के महत्व को जान पाए तथा संगीत परम्परा के साथ बहुत से उच्चकोटि के संगीतकारों को अपने राज दरबारों में संरक्षण प्रदान किया। जिनमें मीर रहमत अली तानसेन सेनिया परम्परा के वादक मीर नासिर अहमद के पुत्र प्रमुख हैं। कहा जाता है कि इनके पूर्वजों को एक सुरबहार मोहम्मद शाह रंगीले द्वारा प्राप्त हुई जिसे मीर रहमत अली ने अपने शिष्य महबूब अली (प्रसिद्ध सितार वादक और गुरबाणी कीर्तनकार) को भेंट स्वरुप प्रदान कर दिया और गुरु परम्परा का निर्वाह करते हुए भाई बूबा (महबूब अली) ने सुरबहार को अपने शिष्य कुंवर मृगेन्द्र सिंह को भेंट स्वरुप प्रदान कर दिया। मीर रहमत अली के भाई मीर कल्लन खां भी सुरबहार और वीणा वादन में निपुण थे और इनकी शिष्य परम्परा में भाई जीवन, भाई मस्तान, महन्त गज्जा सिंह (ताऊस और दिलरुबा वादक) आदि प्रमुख हैं। कपूरथला परम्परा से ही तुफैल नियाजी और अता मोहम्मद ने भारत की आजादी उपरान्त पाकिस्तान पलायन कर लिया। इन्होंने शास्त्रीय परम्परा को सूफी गायकी में जोड़ा जो अपने प्रदर्शन से पूर्व स्वयं को कपूरथला घराने की परम्परा से जोड़ते हुए अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं। अता मोहम्मद प्रसिद्ध हजूरी रागी भाई लाल (अमृतसर स्वर्ण मन्दिर में गुरबाणी कीर्तनकार) के पिता थे उन्होंने ग्वालियर की परम्परा से बुआ बखले तथा बन्ने खां नंगली वाले का शिष्यत्व ग्रहण किया। भाई लाल ने मियां महबूब अली से शिक्षा प्राप्त की जो कपूरथला के कुंवर बिक्रम सिंह के दरबारी थे तथा सेनिया बीनकार घराना के मीर रहमत अली के शिष्य थे।

पंजाब में ख्याल शैली को प्रचारित करने का श्रेय भाई लाल ;कपूरथला घराने के समर्पित रबाबी भाई मरदाना की 15वीं पीढ़ी से थेद्ध को जाता है। कपूरथला घराने के महबूब अली सितार वादक भी थे और ख्याल गायकी भी सितार के साथ साथ जानते थे। इसलिए ख्याल की परम्परागत बंदिशें अपने शिष्य भाई लाल को याद करवाई तथा भाई लाल ने पुत्र गुलाम हुसैन शगन को इन परम्परागत गत बंदिशों को प्रदान किया। इस प्रकार कपूरथला घराने की पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परागत चीजों का स्थानान्तरण होने से धरोहर के रुप में आगे आगे प्रवाहित होती रही। सन् 1947 के पश्चात ये सभी कलाकार पाकिस्तान चले गए, वहां से समय समय पर कीर्तन करने एवं संगीत की प्रस्तुतियां देने भारत आते रहे हैं।

निष्कर्ष

कपूरथला घारने की राजसी परम्परा का इतिहास बड़ा ही समृद्ध रहा है। यहाँ की ऐतिहासिक इमारतें एवं तानसेन की वंश परम्परा से नसीर अहमद मीर की मज़ार कपूरथला की विशिष्ट संगीत परम्परा की ओर संकेत करती हैं। सभी राजाओं के दरबारों में उच्चकोटि के संगीतकारों की नियुक्तिए उन्हें सभाओं में आमंत्रित कर पुरस्कृत करना, अनुदान प्रदान करना उनके उच्च सांगीतिक ज्ञान को दर्शाती है। कपूरथला घराना के कलाकारों द्वारा इसकी गायकी का प्रचार एवं प्रसार किया। वर्तमान समय शिक्षण संस्थाओं का है, उच्च स्तरीय घराना परम्परा का निर्वाह करने वाले ना तो गायक रहे हैं ना ही समर्पित शिष्य। यही कारण है कि आज इस घराने की परम्परा को संभालने वाले कलाकार ही नहीं है या वह पाकिस्तान निवासी हो गए। राजघराने से रानी अनीता और राजा सुखजीत सिंह द्वारा भारत और पंजाब सरकार के सहयोग से रियासती परम्परा को स्थापित करने का प्रयास अवश्य किया गया परन्तु वह भी ज्यादा समय तक ऐसा नहीं कर पाए। शायद समय की परिवर्तनशीलता किसी भी परम्परा के बदलाव में सहायक होती है। आवश्यकता है अपनी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

परम्पराओं और संस्कृति को सुरक्षित करने की ताकि आने वाली पीढ़ी भारतीय संगीत की अमीर विरासत से अनभिग्य न रह जाए।

परिणाम

आधुनिक काल में तकनीकी ने मनुष्य जीवन में नवीनता का संचार किया है। इसने उसके जीवन के हर पहलू में विविधता भर दी है। इतिहास पूर्वजों की विरासत से जोड़ने की कड़ी रहा है। समय की परिवर्तनशीलता प्रकृति का नियम है जो मनुष्य जीवन में कुछ वर्षों के पश्चात स्वतः ही बदलाव का धारिणी बन जाता है। किसी भी देश प्रांत की सांस्कृतिक, सांगीतिक धरोहर तब तक जीवित रह सकती है जब तक अगली पीढ़ी उसे सुरक्षित करने के लिए प्रयासरत है। कपूरथला राजघराने के इतिहास पर दृष्टि डालने पर ज्ञात हुआ कि यहां के राज शासकों की संगीत के प्रति आसक्ति स्वरुप भारतीय संगीत को मीर नासिर अहमद, मीर रहमत अली, महबूब अली (भाई बूबा), भाई लाल, महन्त गज्जा सिंह, भाई ज्वाला आदि जैसे गुणी संगीतकार प्राप्त हुए। दुखांत है कि आज यह इतिहास के पृष्ठों पर कहानियाँ बन कर रह गया है, जिससे हम जैसी आज की पीढ़ी बिल्कुल अनभिज्ञ है। आवश्यकता है कि वर्तमान सरकारों को विशेष विभागों की स्थापना कर इस सांगीतिक धरोहर को सुरक्षित एवं संरक्षित करने हेतु प्रयासरत होना पड़ेगा।

संदर्भ सूची

बावरा (डॉ) जोगेन्द्र सिंह (1994), भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, ए.बी. एस पब्लिकेशन, जालन्धर

पेन्टलए (डॉ) गीता (2011), पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशनस, नई दिल्ली।

कंवल, बलबीर सिंह (2010), पंजाब दे प्रसिद्ध, रागी रबाबीए प्रकाशक सिंह ब्रदर्स, अमृतसर

सिंहए (डॉ) गुरनाम (2005), पंजाबी संगीतकार, पब्लिकेशनस ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

कौर, (डॉ) मनजीत, (2010), कपूरथला रियासत के शास्त्रीय संगीतज्ञ एवं गुरबाणी कीर्तनकारों का योगदान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, दिल्ली विश्वविधालय, दिल्ली

Kapurthala A Glorious Blend of Rich Heritage and Modernity (Oct. 2007) Kapurthala Heritage Trust, Kapurthala

अमृतकीर्तन, जनवरी-फरवरी अंक 1990, अमृत कीर्तन ट्रस्ट, चंडीगढ़

Time of India – 19.02.2003

The Tribune, Magazine Section, 12.08.2007